हफ़्तावार रिसाला : 199
Weekly Booklet : 199

Imame Maalik Ka Ishqe Madina (Hindi)

यह रिसाला शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ की किताब "आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात" और कुछ नए मवाद के इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है

इमामे मालिक का इश्क़े मदीना

सफ़हात : 18

- आलिमे मदीना कौन हैं ? 02
- मशहूर आशिक़े रसूल इमामे मालिक की 12 हिकायात 07
- जहन्नम से नजात की बिशारत 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़् : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"इमामे मालिक का इश्क़े मदीना"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • E-mail :hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इमामे मालिक का इश्क़े मदीना

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **''इमामे मालिक का इश्क़े मदीना''** पढ़ या सुन ले, उसे ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के सदक़े इश्क़े मदीना से मालामाल फ़रमा, उसे बार बार मदीनए पाक की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ'' अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी। (سعادۃ الدارین، ص244)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इमामे मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का तआ़रुफ़

करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का नाम ''मालिक'' और कुन्यत ''अबू अ़ब्दुल्लाह'' है। आप चार मुज्तहिद इमामों में से एक मश्हूर इमाम और तब्अ़ ताबिई[1] हैं। आप की विलादत मश्हूर क़ौल के मुत़ाबिक़ 93 हि. में मदीने शरीफ़ में हुई

1..... ताबिई से मुराद वोह शख़्स है जिस ने सह़ाबी से ब ह़ालते ईमान मुलाक़ात की और उस का ख़ातिमा भी ईमान पर हुवा और तब्अ़ ताबिई से मुराद वोह शख़्स है जिस ने ताबिई से ब ह़ालते ईमान मुलाक़ात की और उस का ख़ातिमा भी ईमान पर हुवा। (لغۃ الفقہاء، ص117)

और मदीनए पाक में ही आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा।

(تہذیب الاسماء واللغات، 2/386۔ سیر اعلام النبلاء، 7/382، رقم:1180۔ الاعلام للزرکلی، 5/257ملتقطا)

हुसूले इल्म

इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने जब इल्मे दीन हासिल करने का इरादा किया तो इस ख़्वाहिश का इज़्हार अपनी अम्मीजान से किया और उन से इल्म हासिल करने के लिये जाने की इजाज़त मांगी। वालिदा ने इन्हें कपड़े पहना कर तय्यार किया, सर पर टोपी रखी और उस पर इमामा बांधा। फिर फ़रमाया : अब जाओ और इल्म सीखो। (ترتیب المدارک، 1/150ملخصا)

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के असातिज़ा में ज़ियादा तर मदीने शरीफ़ के बुज़ुर्गाने दीन शामिल थे, अल्लामा ज़ुरक़ानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : आप ने नव सो (900) से ज़ियादा मशाइख़ से इल्म हासिल किया। (شرح الزرقانی علی الموطا، 1/35) इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का हाफ़िज़ा (Memory) बहुत आ'ला दरजे का था, आप फ़रमाया करते थे कि जिस चीज़ को मैं ने याद कर लिया फिर उसे कभी नहीं भूला। (بستان المحدثین، ص16)

आलिमे मदीना कौन हैं ?

इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ वोह आलिम हैं जिन की ख़ुश ख़बरी **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाई थी। चुनान्चे हज़रते इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिरमिज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपनी किताब "जामेए तिरमिज़ी" में हदीस शरीफ़ रिवायत फ़रमाते हैं : अन्क़रीब लोग इल्म की तलाश में तेज़ रफ़्तारी से सफ़र करेंगे लेकिन वोह मदीने के आलिम से ज़ियादा इल्म वाला किसी को नहीं पाएंगे। (ترمذی، 4/311، حدیث:2689مفہوما)

दूसरी ह़दीसे पाक में है : दुन्या में उस (आ़लिमे मदीना) से बढ़ कर कोई आ़लिम न होगा, लोग उस की त़रफ़ सफ़र कर के आएंगे। (ترتیب المدارک وتقریب المسالک، 1/68، 69) ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा गया कि "आ़लिमे मदीना" कौन हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : बेशक वोह ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (आ़लिमे मदीना से मुराद) ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हैं। (ترمذی، 4/311، حدیث:2689)

बादशाह का दरवाज़ा

इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने वाले ख़ुश नसीब लोग दूर दूर से सफ़र कर के आप के पास ह़ाज़िर होते थे। आप के दरवाज़े पर ह़दीस और फ़िक़्ह सीखने वालों का यूं रश (Crowd) होता था जैसे किसी बादशाह के दरवाज़े पर होता है।

(سیر اعلام النبلاء، 7/387، شرح الزرقانی علی الموطا، 1/35)

इल्मी शानो शौकत

ह़ज़रते यह़या बिन सईद क़त्तान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरह में सिन 144 हिजरी में ह़ाज़िर हुवा। उस वक़्त ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दाढ़ी शरीफ़ और सरे मुबारक के बाल काले थे। लोग आप के गिर्द ख़ामोश बैठे थे। आप के रो'ब की वज्ह से किसी को बात करने की हिम्मत न थी। मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आप के इ़लावा कोई फ़तवा न देता था। मैं आप के सामने बैठ गया और एक सुवाल किया तो आप ने मुझे ह़दीसे पाक से जवाब दिया। मैं ने फिर सुवाल किया तो आप ने फिर जवाब इर्शाद फ़रमाया। फिर आप के दोस्तों ने मुझे झंझोड़ा तो मैं ख़ामोश हो गया। (ترتیب المدارک وتقریب المسالک، 2/29)

ह़ज़रते ह़म्माद बिन ज़ैद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में एक शख़्स कोई मस्अला पूछने आया जिस में लोगों का इख़्तिलाफ़ था तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ भाई ! अगर तू अपने दीन की सलामती चाहता है तो आ़लिमे मदीना से पूछ और इन की बात तवज्जोह से सुन, क्यूं कि वोह ह़ुज्जत (या'नी दलील) हैं और लोगों के इमाम हैं। (المدونۃ الکبریٰ، 1/64)

ह़ज़रते अबू क़ुदामा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने ज़माने के सब से बड़े "ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस" थे। (ترتیب المدارک وتقریب المسالک، 1/150) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इ़ल्मी मक़ाम येह था कि आप के असातिज़ा भी आप के पास मसाइल के ह़ल के लिये आते थे। (وفیات الاعیان، 4/3 مفہوما)

मस्जिदे नबवी में ह़ल्क़ए दर्स

मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आप की निशस्त उस जगह होती थी जहां मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه बैठते थे और येह वोह जगह थी जहां **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के दौरान आराम फ़रमाते थे। नीज़ मदीनए पाक में जिस घर में आप रहते थे वोह सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه का मकान था। (ترتیب المدارک، 1/124)

इमामे शाफ़ेई इमामे मालिक के पास

इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : मैं आप से मुअत्ता (या'नी ह़दीसे पाक की किताब) पढ़ना चाहता हूं। ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे कातिब (Writer) ह़बीब के पास चले जाओ, वोह उस की क़िराअत करता

है। आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप से राज़ी हो ! मुझ से एक सफ़्हा सुन लीजिये, अगर मेरा पढ़ना अच्छा लगे तो मैं आप को पढ़ कर सुनाऊंगा वरना छोड़ दूंगा। ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : पढ़िये ! आप ने एक सफ़्ह़ा पढ़ा और ख़ामोश हो गए। फ़रमाया : मज़ीद पढ़िये। आप एक सफ़्ह़ा पढ़ कर फिर ख़ामोश हो गए। इमामे मालिक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने फिर इर्शाद फ़रमाया : मज़ीद पढ़िये ! आप ने फिर पढ़ा तो इमामे मालिक को बहुत अच्छा लगा। फिर आप ने इमामे मालिक के हां पूरी मुअत्ता पढ़ी और जब दोबारा ह़ाज़िर ख़िदमत हुए तो इमामे मालिक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई ऐसा शख़्स तलाश करो जो तुम्हें पढ़ाए। तो ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं चाहता हूं कि आप ख़ुद मुझ से सुनें, अगर अच्छा न पढ़ सकूं तो कोई पढ़ाने वाला तलाश कर लूंगा। इमामे मालिक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : अच्छा ! ठीक है, पढ़िये ! तो ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने पूरी मुअत्ता शरीफ़ ज़बानी सुना दी। आप फ़रमाते हैं : इस पर इमामे मालिक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने मुझे दुआ़ देते हुए निहायत ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया।

(حلیۃ الاولیاء،9/78، حدیث:13177،13178،13180،بتغیر)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इमामे मालिक पर हुज़ूर का करम

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़म्मद दरावर्दी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं मस्जिदे नबवी में रियाज़ुल जन्नह (या'नी जन्नत की क्यारी) में आराम कर रहा था कि मुझे नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की ज़ियारत हुई। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते अबू बक्र व उमर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के साथ अपने मज़ारे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ लाए। मैं ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** आप कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : मालिक के लिये सीधी राह क़ाइम कर रहा हूं। बेदार हो कर जब मैं इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास हाज़िर हुवा तो आप मुअत्ता शरीफ़ को तरतीब दे रहे थे, मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इस ख़्वाब के बारे में बताया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रो पड़े। (ترتیب المدارک وتقریب المسالک، 2/70)

ह़दीस का अदब

इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास जब लोग कुछ पूछने के लिये आते तो ख़ादिमा आप के मकाने आ़लीशान से निकल कर पूछती कि ह़दीस पूछने के लिये आए हो या शर्ई मस्अला ? अगर वोह कहते कि शर्ई मस्अला मा'लूम करने के लिये आए हैं तो इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़ौरन बाहर तशरीफ़ ले आते। और अगर वोह कहते कि ह़दीस शरीफ़ सुनने के लिये आए हैं तो आप पहले ग़ुस्ल फ़रमा कर उ़म्दा लिबास (Elegant dress) पहनते, ख़ुश्बू लगाते, इमामा शरीफ़ बांधते फिर अपने सर पर चादर ओढ़ लेते। आप के लिये तख़्त बिछाया जाता, जिस पर आप इन्तिहाई आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ बैठ कर ह़दीस शरीफ़ बयान फ़रमाते और शुरूए़ मजलिस से आख़िर तक ख़ुश्बू सुलगाई जाती और येह तख़्त सिर्फ़ ह़दीस शरीफ़ बयान करने के लिये मख़्सूस किया गया था, जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इस की वज्ह पूछी गई तो आप ने फ़रमाया : मैं येह बात पसन्द करता हूं कि ह़दीसे रसूल की ख़ूब ता'ज़ीम करूं। (الشفاء، 2/45)

इमामे मालिक का क़ब्र में मदद करना

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे उस्ताज़ शैखुल इस्लाम इमाम नासिरुद्दीन लक़ानी मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का जब इन्तिक़ाल हुवा (तो) बा'ज़ नेक लोगों ने उन्हें ख़्वाब में देखा, पूछा : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या किया ? कहा : जब मुन्कर नकीर ने मुझे सुवाल के लिये बिठाया तो इमामे मालिक (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) तशरीफ़ लाए और उन (या'नी मुन्कर नकीर) से इर्शाद फ़रमाया : (क्या) ऐसा शख़्स (या'नी इतना ज़बर दस्त आ़लिमे दीन) भी इस (बात) की ह़ाजत रखता है कि उस से खुदा व रसूल पर ईमान के बारे में सुवाल किया जाए ! अलग हो (जाइये) इस के पास से। (इमामे मालिक के) येह फ़रमाते ही नकीरैन मुझ से अलग हो गए। जब मशाइख़े किराम सूफ़िया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم सख़्ती के वक़्त दुन्या व आख़िरत में अपनी पैरवी करने वालों (Followers) और मुरीदों का लिह़ाज़ रखते हैं तो उन अइम्मए मज़ाहिब का क्या कहना जो ज़मीन की मेख़ें हैं, दीन के सुतून हैं और शारेअ़ (या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत पर उस के अमीन हैं رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن। (میزان الکبری،الجزءالاول،ص65)

मश्हूर आ़शिक़े रसूल इमामे मालिक की 12 ह़िकायात

﴾1﴿ मदीने में नंगे पाउं

करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे, आप मदीनए पाक की गलियों में नंगे पैर चला करते थे। (طبقات الکبری للشعرانی،الجزءالاول،ص76)

﴾2﴿ हर रात दीदारे सरवरे काएनात

ह़ज़रते मुसन्ना बिन सईद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है : ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते थे, कोई रात ऐसी नहीं गुज़री जिस में मुझे ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न हुई हो। (حلیۃ الاولیاء 6/346)

मिट जाए येह ख़ुदी तो वोह जल्वा कहां नहीं दर्दा मैं आप अपनी नज़र का ह़िजाब हूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 91)

﴾3﴿ मदीने में सुवारी से परहेज़

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने मदीनए मुनव्वरह शरीफ़ में ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे देखे जो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बत़ौरे हदिय्या (GIFT) पेश किये गए थे, इस क़दर आ'ला घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : येह घोड़े कितने उ़म्दा हैं ! फ़रमाया : मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : एक घोड़ा अपने लिये तो रख लीजिये। फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे पयम्बर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं या'नी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है। (احیاء العلوم 1/48 ملخصا، الروض الفائق، ص217)

हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तो जाग ओ पाउं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 217)

﴾4﴿ ज़िक्रे नबी के वक़्त रंग बदल जाता

ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इश्क़े रसूल का आ़लम येह था कि जब उन के

सामने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता तो उन के चेहरे का रंग बदल जाता और वोह ज़िक्रे मुस्त़फ़ा की ता'ज़ीम के लिये ख़ूब झुक जाते। एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : अगर तुम वोह देखते जो मैं देखता हूं तो इस बारे में सुवाल न करते। (الشفاء، 2/41-42)

जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 94)

﴾5﴿ दर्से ह़दीसे पाक का अन्दाज़

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (ने 17 बरस की उ़म्र में दर्से ह़दीस देना शुरूअ़ किया) जब अह़ादीसे मुबारका सुनानी होती, चोकी (मस्नद) बिछाई जाती और आप उ़म्दा लिबास ज़ेबे तन फ़रमा कर ख़ुश्बू लगा कर निहायत आ़जिज़ी के साथ अपने ह़ुज्रए मुबारका से बाहर तशरीफ़ ला कर उस पर बा अदब बैठते (दर्से ह़दीस के दौरान कभी पहलू न बदलते) और जब तक उस मजलिस में ह़दीसें पढ़ी जातीं अंगेठी में ऊ़द व लोबान सुलगता रहता। (بستان المحدثین ص19 ملخصا)

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्के तर ग़ुबार ! अदना सी येह शनाख़्त तेरी रह गुज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225)

﴾6﴿ बिच्छू ने 16 डंक मारे मगर दर्से ह़दीस जारी रखा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह इमामे मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه दर्से ह़दीस दे रहे थे कि बिच्छू ने आप को 16 मरतबा डंक मारे। दर्द की शिद्दत से चेह्रए मुबारक ज़र्द (या'नी पीला) पड़ गया मगर दर्से ह़दीस जारी रखा। (और पहलू तक न बदला) जब दर्स ख़त्म हुवा और लोग चले गए तो मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू

अ़ब्दुल्लाह ! आज मैं ने आप में एक अ़जीब बात देखी ! आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : हां ! मगर मैं ने ह़दीसे रसूल की ता'ज़ीम की बिना पर सब्र किया। (الشفاء، 2/46)

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें ढूंढा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 130)

﴾7﴿ अह़ादीस के अवराक़ पानी में डाल दिये मगर

आ़शिक़े मदीना ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सब से पहले फ़न्ने ह़दीस की बा क़ाइ़दा किताब मुरत्तब फ़रमाई जो कि मुअत्ता़ इमामे मालिक के नाम से मश्हूर है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुलूस के पैकर थे। चुनान्चे ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : इमामे मालिक जब "मुअत्ता़" की तस्नीफ़ से फ़ारिग़ हुए तो आप ने अपने इख़्लास को आज़्माने के लिये मुअत्ता़ के मुसव्वदे के तमाम अवराक़ (Papers) पानी में डाल दिये और फ़रमाया : अगर इन में से एक वरक़ भी भीग गया तो मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं है। लेकिन (येह ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सिद्क़े निय्यत और इख़्लास का समरा था कि) एक वरक़ भी न भीगा। (شرح الزرقانی علی المؤطاء، 1/36 ملخصا)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर क़रीब आए ने मेरे कभी रिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

﴾8﴿ इश्क़े रसूल में रोने वाले मुह़द्दिस की क़द्रदानी

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से किसी ने (आप के उस्ताज़े मोह़तरम) ह़ज़रते अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बारे में पूछा तो फ़रमाया : मैं जिन ह़ज़रात से अह़ादीसे मुबारका रिवायत करता हूं वोह उन सब में

अफ़्ज़ल हैं, मैं ने उन्हें दो मरतबा सफ़रे ह़ज में देखा कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे अन्वर होता तो वोह इतना रोते कि मुझे उन पर रह़म आने लगता। जब मैं ने ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा और इश्क़े रसूल का येह आ़लम देखा तो मुतअस्सिर हो कर उन से ह़दीस रिवायत करना शुरूअ़ की। (الشفاء، 2/41 ملخصا)

यादे नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

﴾9﴿ ख़ाके मदीना की तौहीन करने वाले के लिये सज़ा

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मदीने की मिट्टी (या'नी ज़मीन) को ख़राब कहने वाले के बारे में फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (الشفاء، 2/57)

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आ़लम उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 32)

﴾10﴿ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रम से बाहर जाया करते

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने (ता'ज़ीमे मदीना की ख़ातिर) मदीने शरीफ़ में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की, इस के लिये हमेशा ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूर थे। (بستان المحدثین، ص19)

ऐ ख़ाके मदीना तू ही बता किस त़रह़ पाउं रख्खूं यहां
तू ख़ाके पा सरकार की है आंखों से लगाई जाती है

﴾11﴿ मस्जिदे नबवी में आवाज़ धीमी रखो

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मस्जिदे नबवी शरीफ़ में गुफ़्तगू के दौरान ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आवाज़ बुलन्द की तो आप ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ऐ ख़लीफ़ा ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द मत करो,

अल्लाह पाक ने बारगाहे रिसालत में आवाज़ें धीमी रखने वालों की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) फ़रमाई है, चुनान्चे पारह 26 **सुरतुल ह़ुजुरात** की तीसरी आयते मुबारका में फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ۝۳ (پ26، الحجرات:3)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास, वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़ गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

जब कि आवाज़ें बुलन्द करने वालों की इन अल्फ़ाज़ में मज़म्मत बयान फ़रमाई है, चुनान्चे इसी सूरत की चौथी आयते करीमा है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ۝۴ (پ26، الحجرات:4)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें ह़ुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं।

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत यक़ीनन आज भी उसी त़रह़ है जिस त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी में थी। इमामे मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की इस गुफ़्तगू से अबू जा'फ़र ख़ामोश हो गया। (الشفاء، 41/2)

तुझ से छुपाऊं मुंह तो करूं किस के सामने क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 226)

﴿12﴾ रौज़ए रसूल की त़रफ़ मुंह कर के दुआ मांगो

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने दरयाफ़्त किया कि मैं (रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर) क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दुआ मांगूं या नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़

रुख़ रखूं ? ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तुम क्यूंकर मुंह फेर सकते हो ? हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक की बारगाह में तुम्हारे और तुम्हारे वालिदे गिरामी ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह के लिये भी वसीला हैं, तुम नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ मुंह कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगो, **अल्लाह** पाक अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त ज़रूर क़बूल फ़रमाएगा, **अल्लाह** रब्बुल इ़बाद ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ (پ5، النساء:64)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह़रबान पाएं।

(الشفاء، 41/2)

मुजरिम बुलाए आए हैं "جَآءُوْكَ" है गवाह
फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, 205)

आदमी का नसब ही उस का मकान है

ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दुन्या से बहुत ज़ियादा बे रग़बत रहते और उमूरे आख़िरत में ग़ौरो फ़िक्र करते रहते थे। ह़ुसूले इल्म में बहुत कोशां रहते और मोमिनीन की ख़ैर ख़्वाही करते थे। ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन महदी ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा : क्या आप का कोई मकान है ?

तो आप ने जवाब में फ़रमाया : नहीं। लेकिन मैं आप को एक ह़दीसे पाक सुनाता हूं, मैं ने ह़ज़रते रबीआ़ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को फ़रमाते सुना : आदमी का नसब ही उस का मकान है। (احیاء العلوم، 1/47)

जिस से हो सके वोह मदीने शरीफ़ में मरे

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَطَاعَ اَنْ یَّمُوْتَ بِالْمَدِیْنَةِ فَلْیَمُتْ بِهَا فَاِنِّیْ اَشْفَعُ لِمَنْ یَّمُوْتُ بِهَا या'नी जो मदीने में मर सके वोह वहीं मरे क्यूं कि मैं मदीने में मरने वालों की शफ़ाअ़त करूंगा। (ترمذی، 5/483، حدیث:3943)

मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसल्मानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को या'नी जिस मुसल्मान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि ख़ुदा नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे ख़ुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दुआ़ करते थे कि "मौला! मुझे अपने मह़बूब के शह्र में शहादत की मौत दे।" आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰہ ! फ़ज्र की नमाज़, मस्जिदे नबवी, मेह़राबुन्नबी, मुसल्लाए नबी और वहां शहादत। मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरह में हैं, हुदूदे मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए, ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का भी येह ही दस्तूर रहा। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/222)

मदीने में वफ़ात, ब वक़्ते रुख़्सत नेकी की दा'वत

इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की वफ़ात 179 हिजरी के माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र या रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की 10 या 11 या 14 तारीख़ को मदीनए मुनव्वरह में हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुए । (سیر اعلام النبلاء، 7/434-435) ब वक़्ते रिह़लत आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने नेकी की दा'वत दी । यह़या बिन यह़या मस्मूदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि रबीआ़ ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को नमाज़ के मसाइल बताना रूए ज़मीन की तमाम दौलत सदक़ा करने से बेहतर है और किसी शख़्स की दीनी उल्झन दूर कर देना सो ह़ज करने से अफ़्ज़ल है। नीज़ इब्ने शहाब ज़ोहरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले से बताया कि उन्हों ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को दीनी मश्वरा देना सो ग़ज़वात में जिहाद करने से बेहतर है। यह़या बिन यह़या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं : इस गुफ़्तगू के बा'द इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कोई बात नहीं की और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी । (بستان المحدثین، ص38،39)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

त़यबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 222)

जहन्नम से नजात की बिशारत

ह़ज़रते इब्ने क़ासिम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मरज़े विसाल में आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। ह़ज़रते इब्ने दरावर्दी ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! गुज़श्ता रात मैं ने एक ख़्वाब देखा है, क्या आप सुनना

पसन्द फ़रमाएंगे ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : सुनाइये । उन्हों ने ख़्वाब बयान करते हुए कहा : मैं ने सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आदमी देखा जो आस्मान से उतरा । उस के हाथ में एक रजिस्टर था जो ज़मीन व आस्मान के दरमियान फैला हुवा था । उस ने तीन मरतबा कहा : هٰذَا بَرَاءَةٌ لِمَالِكٍ مِّنَ النَّارِ या'नी येह ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के लिये दोज़ख़ से बराअत नामा है । अभी येह गुफ़्तगू चल ही रही थी कि ख़लीफ़ा का क़ासिद ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मुअज़्ज़िन ने गुज़श्ता रात एक ख़्वाब देखा है जो मैं ने उस से सुना है । चुनान्चे उस ने भी पहले ख़्वाब की मिस्ल ख़्वाब सुनाया । इस पर ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** ही ह़क़ीक़ी मददगार है, वोह जो चाहता है करता है ।

(الروض الفائق، ص217، حکایتیں اور نصیحتیں، ص422)

ह़ज़रते यूनुस बिन अ़ब्दुल आ'ला رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते बिश्र बिन बक्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को येह फ़रमाते सुना कि मैं ने ह़ज़रते इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को उ़लमाए किराम के एक गुरौह के साथ जन्नत में देख कर पूछा : ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहां हैं ? तो उन्हों ने बताया : उन के दरजात बहुत बुलन्द हैं । मैं ने पूछा : वोह कैसे ? जवाब मिला : उन की सच्चाई की बदौलत । (التمہید لابن عبد البر، 56/1)

एक कलिमे के सबब बख़्शिश

किसी नेक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बा'दे विसाल ख़्वाब में देख कर पूछा : ''مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ'' या'नी **अल्लाह** ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया :

उस ने मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : एक कलिमे के सबब जो मैं ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ किसी से सुना था कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ किसी मुर्दे को देखते तो पढ़ते : ''اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ، سُبْحَانَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ'' या'नी वोह **अल्लाह** है जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह आप ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, पाक है वोह ज़ात जो ख़ुद ज़िन्दा है कि उसे कभी मौत नहीं।'' तो मैं भी अपनी ज़िन्दगी में जब किसी मुर्दे को देखता तो हमेशा येह कलिमा पढ़ा करता जिस की बरकत से **अल्लाह** पाक ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया। (ترتیب المدارک وتقریب المسالک، باب ذکر وفاۃ مالک، 1/149)

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तज्हीज़ो तक्फ़ीन

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे मेरे अपने कपड़ों में ही कफ़न दिया जाए और जनाज़ा गाह में नमाज़े जनाज़ा अदा की जाए। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की नमाज़े जनाज़ा कसीर लोगों ने अदा की जिन में ह़ज़रते इब्ने अ़याश, ह़ज़रते हाशिम, ह़ज़रते इब्ने किनाना, ह़ज़रते शो'बा बिन दावूद, आप के कातिब ह़ज़रते ह़बीब और उन के बेटे رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم जैसी शख़्सय्यात भी शामिल थीं। कई लोग आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की क़ब्रे मुबारक में भी उतरे। (التمہید لابن عبد البر، 1/67، الروض الفائق، ص217)

आप के विसाल पर अहले इराक़ का सदमा

जब ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के विसाल की ख़बर इराक़ पहुंची तो गोया इराक़ की सर ज़मीन लरज़ने लगी। वहां के लोगों को आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की वफ़ात पर बहुत सदमा पहुंचा। एक आदमी ने ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से अ़र्ज़ की : ऐ अबू मुह़म्मद ! एक शख़्स की ख़्वाहिश है कि वोह किसी ऐसे आ़लिम से मस्अला दरयाफ़्त करे

जो उस के और **अल्लाह** के दरमियान दलील हो तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐसे आ़लिम तो ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ही हैं कि जिन्हें आदमी अपने और **अल्लाह** पाक के दरमियान दलील बना सकता है। लेकिन जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बताया गया कि वोह तो विसाल फ़रमा चुके हैं तो बसद ह़स्रतो अफ़्सोस कहने लगे : हाए ! अच्छे लोग दुन्या से चले गए। (الروض الفائق، ص218, ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 424)

फ़ेहरिस

इमामे मालिक का इश्के़ मदीना...1
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....1
इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का तआ़रुफ़....1
ह़ुसूले इ़ल्म.....2
आ़लिमे मदीना कौन हैं ?.....2
बादशाह का दरवाज़ा.....3
इ़ल्मी शानो शौकत.....3
मस्जिदे नबवी में ह़ल्क़ए दर्स.....4
इमामे शाफ़ेई इमामे मालिक के पास..4
इमामे मालिक पर हुज़ूर का करम..5
ह़दीस का अदब.....6
इमामे मालिक का क़ब्र में मदद करना..7
मदीने में नंगे पाउं.....7
हर रात दीदारे सरवरे काएनात.....8
मदीने में सुवारी से परहेज़.....8
ज़िक्रे नबी के वक़्त रंग बदल जाता.....8
दर्से ह़दीसे पाक का अन्दाज़.....9
बिच्छू ने 16 डंक मारे मगर दर्से ह़दीस जारी...9
अह़ादीस के अवराक़ पानी में डाल दिये मगर.....10
आ़शिक़े रसूल मुह़द्दिस की क़द्रदानी.....10
ख़ाके मदीना की तौहीन करने वाले के लिये सज़ा...11
क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रम से बाहर जाते....11
मस्जिदे नबवी में आवाज़ धीमी रखो.....11
रौज़ए रसूल की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगो....12
आदमी का नसब ही उस का मकान है.....13
जिस से हो सके वोह मदीने शरीफ़ में मरे....14
ब वक़्ते रुख़्सत नेकी की दा'वत.....15
जहन्नम से नजात की बिशारत.....15
एक कलिमे के सबब बख़्शिश.....16
आप के विसाल पर अहले इ़राक़ का सदमा..17

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सरकार की दुआ

रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ने दुआ फ़रमाई : या अल्लाह !

जितनी बरकतें तूने मक्के में रखी हैं

उस से दुगनी मदीने में रख दे ।

(بخاری، 1/620، حدیث:1885)

978-969-722-049-6
01082195

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net